श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष- अभ्यास - ६ नवम्बर-२०22

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. अनाज पीसने के पश्चात भी आटा कितनेक दिन .... रहता है।
२. .... की दृष्टि से सर्व तत्त्व समझ गया।
३. बाहर से तिरछा चले और अंदर से .... व्यवहार करें।
४. हजार योजन मूल में विस्तार और ऊँचाई रखने वाले कूटों को .... कहते हैं।
५. इन्द्रो, कुबेरो, चक्रवतीओं द्वारा बहुतबार स्तवित पूजीत ऐसे .... को मैं प्रणाम करता हूँ।
६. गुरु से .... अवग्रह क्षेत्र से बाहर रहकर देशना सुनना।
७. तिर्यंचायु का .... प्रकृति में समावेश होता है।
८. व्यापक विगुण ऐसी आत्मा को कर्म का .... है ही नहीं।
९. ये बहुसंख्य शिखर ....हैं।
१०. .... इस विभाषा में दो शब्द हैं।
११. तामसिक आहार लेने से मानसिक विकार और .... में वृद्धि होती है।
१२. एक .... को हर्ष के आवेश में गुरुवंदन की भावना से केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।
१३. आचार्य आदि को आता देख कर मस्तक पर .... प्रणाम करना।
१४. श्रावक ने प्रथम उत्कृष्ट से तो प्रासूक शुद्धमान .... आहार लेना चाहिये।
१५. स्थिर नाम कर्म, आदेय नाम कर्म का समावेश .... में है।
१६. त्रिकरण योग से .... शांतिनाथ का शरण अंगीकार करता हूँ।
१७. श्री मंडित स्वामी सर्वश्रेष्ठ .... संघयण वाला शरीर पाये थे।
१८. मैं कारण बिना .... करुंगा नहीं।
१९. .... गुण रहित वीतराग केवलज्ञानी केवलदर्शनी ऐसा जो आत्मा ज्ञान से सर्व व्यापक है।
२०. श्री कृष्ण महाराजा ने .... को वंदन करके तीर्थंकर गोत्र बांधा।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. प्रदेशों की अपेक्षा से भोग लिया जाये जबकि काल की अपेक्षा से कम होता है, वह कौनसा आयुष्य कर्म कहलाता है।
२. वेद पदों में देवों को कैसे बताया गया हैं ?
३. वर्तमान में द्वादशावर्त वंदन किसे करने का व्यवहार है ?
४. हिमवंत और शिखरी कौन से पर्वत हैं ?
५. तपस्या से तत्काल उगे शरद ऋतु के सूर्य से अधिक कांति किसकी है।
६. पका हुआ आम मुँह में रखकर चूसने से कौनसा अतिचार लगता है।
७. विहायो गति नाम कर्म कौनसी प्रकृति में आता है ?
८. किस रत्नकुक्षी माता के दोनों पुत्र गणधर थे ?
९. फागुन चौमासे के पश्चात श्रावक को किसका त्याग करना चाहिये ?
१०. त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक का समावेश किसमें होता है ?
११. लिये हुये नियमों के सुन्दर पालन के लिये हमें कौन सहायता करता है ?
१२. सभी शिखरों में आखरी शिखर क्या कहलाता है ?
१३. अंतर के भाव बिना किये गये वंदन कौन से वंदन है ?
१४. वीर प्रभु के सातवें गणधर का कौनसा संस्थान था ?
१५. किस गति में दुःख है फिर भी जीने की इच्छा है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) फास २) प्पवत्तयं ३) सगसट्ठि ४) विज्जुपह ५) अभ्युथानं ६) मिच्चाई ७) विचरण ८) अणहं
९) निरया १०) पत्तेआ ११) सुरगिरी १२) उरग १३) उवणमे १४) नीआ १५) चउक्क १६) संठाण
१७) इक्कारस १८(तवसा १९) सय २०) सुहुम

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) श्री शांतिनाथ	१) रोहिणी नक्षत्र	६) सुभग	६) मंडित
२) आताप	२) आकाश	७) हरे चने	७) महामुनि
३) पर्वतिथि	३) आदेय	८) धनदेव	८) आयुष्य कर्म
४) मौर्यपुत्र	४) नियम	९) चारणमुनि	९) गंधमादन
५) सौमनस	५) उद्योत	१०) उपानह	१०) दुःपक्वौषधि

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. आनुपूर्वी नामकर्म के भेद कितने ?
२. पर्वतों के अधिष्ठायक देव-देवीओं के आवास कितने ?
३. श्री मंडित गणधर ने कितने वर्ष की आयु में चार घनघांती कर्मो का नाश किया ?
४. भोगोपभोग व्रत में भोजन प्रकार के कितने नियम हैं ?
५. नाम कर्म की कुल प्रकृति में से कितनी प्रकृति कम करें तो सडसठ प्रकृति होती हैं ?
६. महाविदेह क्षेत्र में कितने वक्षस्कार पर्वत आये हुए हैं ?
७. व्यसन, अभक्ष्य, अनंतकाय संबंधी कितने नियम अभ्यासक्रम में दिये हैं ?
८. शरीर बांधते समय कितनी प्रकृति के साथ बांधते हैं ?
९. अजित शांति स्तोत्र की २० वीं गाथा में कितने भवनपति देवताओं के नाम आते हैं ?
१०. वीर प्रभु के सातवे गणधर कितने वर्ष की उम्र में राजगृही पधारे ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. शाश्वत प्रतिमाजी के विविध अंग विविध रत्नो के बने होते हैं ।
२. फेटा वंदन केवल गुरु भगवंत को ही किया जाता है ।
३. जिनकी काया उज्वल कांति और तेज से परिपूर्ण होती है उन्हें देव कहते हैं ।
४. पानी को एक उकाला आए याने पानी अचित्त हो जाए ।
५. उपांग नाम कर्म के तीन भेद हैं ।
६. मघा नक्षत्र में श्री मौर्यपुत्र गणधर का जन्म हुआ था ।
७. भानजे मुनि श्री शीतलाचार्य को वंदन करने आ रहे थे ।
८. सिद्धायतन को पश्चिम दिशा में भी द्वार होता है ।
९. मांस, मदिरा, लहसुन,कांदे, तामसिक आहार कहलाते है ।
१०. श्री मौर्यपुत्र गणधर उम्र में स्वयं के गुरु से बडे थे ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. अगर यह मौका साध लेगें तो ही आत्मकल्याण साध सकेगें अन्यथा जीवन हार जायेंगे ।
२. अंतर के बहुमान से विधिपूर्वक वंदन करना वह भाव वंदन है ।
३. विराधना से अटकें तो शुभ - शुद्ध भाव में रमण करते सद्गति का आयुष्य बंधता है ।
४. शंकाओं का समाधान करने का सुनहरा मौका मिला है ।
५. आम्रादिक के म्होर और सूक्ष्म केरी जैसी असार वस्तु कि जिसके खाने से तृप्ति भी न हो और भूख भी मिटे नहीं ।
६. असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसियं, देवकोडी सय संधुअं समणसंघ परिवंदिअं ।
७. ये वेद पद कर्म से सदा के लिये, मुक्त हुए ऐसी मुक्तात्माओं का स्वरुप बताते हैं ।
८. उसी रस्सी को पूरा गोल लपेटकर भट्टी में डाल दें तो वह अल्प समय में ही जल जायेगी ।
९. मैं पाँच तिथि, पर्युषण पर्व, आयंबिल की ओली वगैरह पर्व के दरमियान संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करुंगा ।
१०. गुरु को वंदन करने से प्राणी नीच गोत्र का क्षय करता है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. आयुष्य कर्म
२) गुरुवंदन से लाभ और गुरु का बहुमान करना तथा आशातनायें टालना ।
३. भोगोपभोग व्रत क्या है उसका एक अतिचार समझाओ ।
४) मौर्यपुत्र की शंका और प्रभु का समाधान समझाओ ।
५. सिद्धायतन कहाँ है और उसमें क्या है ?

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया
शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.achalgach.com